ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत में प्रशासक वर्ग के लिए 'सुप्रशासन का हृदय - चरित्र' (Character - The Heart of Good Administration) विषय पर आयोजित महासम्मेलन का संक्षिप्त समाचार

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय तथा प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत, राजस्थान में अरावली पर्वत श्रृंखला का सुंदर, प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में **'चरित्र - सुप्रशासन का हृदय' (Character - The Heart of Good Administration)** के विषय पर 6 से 11 जुलाई, 2012 के दौरान प्रशासक वर्ग के महा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें नेपाल एवं पूरे भारत में लगभग 500 से अधिक प्रशासनिक क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस महासम्मेलन में स्वागत सत्र, उद्घाटन सत्र, दो विशेष सत्र, दो वार्तालाप सत्र, दो खुला सत्र, समापन सत्र, चार राजयोग चिंतन सत्र तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभिन्न सत्रों में प्रभावशाली, निपुण एवं अनुभवी वक्ताओं तथा वरिष्ठ राजयोगी वक्ताओं ने प्रेरक वक्तृत्व दिए। उनमें से कुछेक महत्वपूर्ण वक्तव्य के विचार-बिन्दु निम्नलिखित है:

स्वागत सत्र :

- कमजोरियों से मुक्ति पाने हेतु शक्ति प्राप्त करने के लिए नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों में बदले की शक्ति का विकास स्वयं में करना है।
- अपनी सभी समस्याओं को ईश्वर को सोंप दे, तो इसका समाधान सहज मिल ही जाता है।
- कई लोगों की तरक्की/कार्यों से दु:खी होकर फरियाद नहीं करनी है लेकिन अपने को सशक्त करने की जरूरी है।
- यदि प्रशासक अपने कार्यों का प्रारंभ परमात्मा की याद से करेंगे, तो सफलता निश्चित है और वे सर्वप्रिय बनेंगे, स्वयं संतुष्ट होंगे और सबको प्रसन्न रख सकेंगे।

उद्घाटन सत्र:

- जैसे फूल खिलते ही खुश्बु बिखर जाती है, वैसे भगवान के घर आने से तो किस्मत बदल जाती है।
- प्रशासन का मूल आधार है - पवित्रता, इसे अपने जीवन में समाहित करना है।
- चरित्र रूपी नींव पर प्रशासन रूपी मकान बनाना है, इसका आयुष्य दीर्घकाल तक रह सकता है।
- जैसा कर्म हम करेंगे, वैसा हमें देख अन्य करेंगे, इस बात का ध्यान रखने से चरित्र श्रेष्ठ बनता है और शुभ चिंतन में रह शुभचिंतक बनने से हर कार्य में सफलता निश्चित मिलती है।
- चरित्र को श्रेष्ठ बनाने से तथा आध्यात्मिक ज्ञान तथा मूल्यों का उपयोग करने से आदर्श प्रशासन कर सकते है।
- जैसे कार के वाहन को ईधन (पेट्रोल/ड़िजल) की आवश्यकता है। इसी तरह आत्मा के मन को ज्ञान-योग रूपी भोजन की जरूरत है।
- अच्छे प्रशासक को लोगों के कल्याण के बारे में विचार कर प्रशासन करना चाहिए।

- सबसे अच्छा प्रशासन वह है, जिसमें कम से कम आदेश देना पडे और श्रेष्ठ रीति से चलें।
- विपत्तियों के समय में जो व्यक्ति सभी के बचाव के लिए अग्रेषित होगा, वह अच्छा प्रशासक/नेता बनेगा और वह उस समस्याओं का निवारण भी अच्छी तरह से कर सकेगा।
- क्रोध और अहंकार इन्सान की महानता को समाप्त करता है, इसलिए अपने आपको आत्मा समझकर आत्मा के गुणों को धारण करना है।
- अहंकार पर जीत पाने से नुकशान से और क्रोध पर जीत पाने से शारीरीक एवं मानसिक व्याधियों से बच सकते हैं।
- अपने आपको निमित्त समझने से गुस्सा समाप्त होता है।
- भाग्यविधाता भगवान हमें कर्मेन्द्रियों शासक और नियंत्रक बनाने के लिए हमें सशक्त करता है।
- प्रशासक में मानवीय अभिगम रखने के लिए अपने में चरित्र का निर्माण करने के लिए गुणों व विशेषताओं को धारण करना है। पवित्रता ही सफलता की कुंजी है।
- प्रशासकों के लिए स्व-शासन आवश्यक है। स्व-प्रबंधन द्वारा प्राप्त शक्तियों की समस्याओं को सुलझाने से सहायक होती है, यह राजयोग से सहज सम्भव है।
- कर्मों को सफलतापूर्वक करने के लिए स्नेह एवं नियम का संतुलन रखना जरूरी है।
- परमपिता परमात्मा से ही अच्छा प्रशासन करने की शक्ति मिलती है। जिससे नये संसार की रचना होती है।
- अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक ही समय में सारा कार्य करने के बजाय छोटे-छोटे लक्ष निर्धारित कर इसे क्रियान्वित करना है।
- परमपिता परमात्मा ही सभी आत्माओं को सर्व प्रकार के भेदभावों से परे ले जा सकते है इसलिए उनकी आज्ञाओं पर चलना है।
- भारत का प्राचीन राजयोग से ही सर्व समस्याओं को हल कर सकते है।
- परमात्मा द्वारा निर्दिष्ट कर्मों के सिद्धांत द्वारा कर्मों को प्रशंसनीय बना सकते है, इससे अपना जीवन, परिवार, समाज श्रेष्ठ बनेगा।
- राजयोग के अभ्यास से सर्व चिंताएं दूर हो जाती है और इससे शुभ-प्रेरणायें मिलती जो अपने क्षेत्र के कारोबार में सहायक होती है।
- राजयोग चिंतन से आत्मा रूपी बैटरी चार्ज होती है और विभिन्न शक्तियाँ प्राप्त होती है इससे नकारात्मक वातावरण में परिवर्तन आकर सकारात्मक वातावरण बनता है।
- सत्य-समझ के आधार पर व्यक्ति, पशु-पंखी, प्रकृति सभी मर्यादा में रहेंगे, तो सतयुग का प्रारंभ होगा। यह वो समय चल रहा है, परमात्मा स्वयं सत्य-समझ से पुन:स्थापित कर रहे है, इसमें हमें सहयोगी बनना है।
- यदि हमें अपनी प्रशासकीय क्षमता बढ़ानी है, तो स्वयं को आत्मा समझ मन को नियंत्रित करता है, देने की भावना रखनी है, बीती हुई बातों पर पूर्णविराम रखना है, दूसरों को क्षमा करके भूलना है, सभी के लिए शुभ-भावना व शुभ-कामना रखनी है।

- शुद्ध स्वमान को बढ़ाने के लिए अपनी शक्तियों व मूल्यों को समझना है, अपने आपको अद्वितीय और अमूल्य समझना है, अपनी शक्ति प्रमाण कार्य करना है, अपनी भूलों से सीखना है, वर्तमान को ध्यान में रख सकारात्मक अभिगम अपनाना है।
- कुशल प्रशासक तभी सफल प्रशासक बन सकता है, जब वह सवयं खुश रहे और सभी को खुश रख सके।
- संतुष्टता से ही खुशी प्राप्त होती है। प्रेम से हारकर भी जीत की महसूसता होती है।
- अपने कार्यक्षेत्र की समस्या को वहाँ ही कुशलता से हल करें, इसे अन्य क्षेत्र में न ले जाऐं। जिससे घृणापात्र नहीं बनेंगे।
- परिवार में संस्कार-मिलन की रास से संबंध मजबूत होते है और खुशी व सुख प्राप्त होता है।
- परमात्मा से सर्व संबंध रखने से उनसे प्राप्त शक्तियों से मानवीय संबंधों में सुधार आता है, स्नेह और खुशी बढ़ती है।
- अपने कार्यक्षेत्र की समस्या को वहाँ ही कुशलता से हल करें, इसे अन्य क्षेत्र में न ले जाऐं। जिससे घृणापात्र नहीं बनेंगे।
- परिवार में संस्कार-मिलन की रास से संबंध मजबूत होते है और खुशी व सुख प्राप्त होता है।
- परमात्मा से सर्व संबंध रखने से उनसे प्राप्त शक्तियों से मानवीय संबंधों में सुधार आता है, स्नेह और खुशी बढ़ती है।
- भारत मे देवी-देवताओं का दिव्य प्रशासन था, हम सब मिलकर परमात्म-शक्ति के सहयोगी बनकर पुन:निर्माण करना है।
- प्रशासन में हमें दूसरों की परिस्थिति को ध्यान देकर हल करने का मानवीय दृष्टिकोण अपनाना है।
- वर्तमान समय में स्वयं प्रशासन करने के लिए स्वयं को आध्यात्मिकता व राजयोग के अभ्यास से अच्छा बनाना है।
- सच्ची शिक्षा वह है जो सभी प्रकार के भ्रम मिटा दें। भ्रमित पूर्व-धारणाओं में परिवर्तन लाना है।
- मनजीत, जगतजीत बनकर हमें मन के मालिक बनना है। इसके लिए परमात्म-महावाक्यों पर ध्यान देना है और राजयोग-चिंतन प्रतिदिन करना है।
- अच्छे प्रशासन के लिए सकारात्मक व्यवहार जरूरी है, अपनी मनोवृत्ति में परिवर्तन लाना है। तब तनावमुक्त जीवन जी सकते है।
- अपने कर्मों की शुरूआत राजयोग चिंतन से करें, तो अच्छा प्रशासन करने में ईश्वरीय मदद मिलती है।
- कुशल प्रशासन करने के लिए किसी की कमी व भूल पर ध्यान नहीं देना है, हर व्यक्ति के प्रति अटूट विश्वास रखना है, सभी को सहयोग देना है और सर्व से सहयोग लेकर कार्य करना है।
- प्रशासक का चरित्र नष्ट हो जाता है, तो वह अच्छा प्रशासन नहीं कर सकता है। प्रशासक को चरित्रवान बनना है।
- मानवीय एवं दिव्य चरित्र का आधार है आध्यात्मिक चरित्र, जो आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग चिंतन से अपने दैनिक जीवन में लाना है।

BK SPEAKERS

Rajyogini Dadi Janki ji, Chief of Brahma Kumaris
Rajyogini Dadi Hridaya Mohini Ji, Addl. Chief of Brahma Kumaris
Rajyogi B.K. Nirwair, Secretary General, Brahma Kumaris, Mount Abu
B.K. Asha, Chairperson, Administrators' Service Wing & Director, ORC, New Delhi
B.K. Avdhesh Behn, National Co-ordinator, Administrators' Service Wing, Bhopal
B.K. Harish, HQs. Co-ordinator, Administrators' Service Wing, Mt. Abu
B.K. Rohit, Treasurer, Administrators' Service Wing, Valsad
B.K. Urmil, Zonal Coordinator, Administrators' Service Wing, New Delhi
B.K. Mohan Singhal, Academy Co-ordinator, Gyan Sarovar, Mount Abu
B.K. Shashi Behn, National Co-ordinator, Sports Wing, Mount Abu
B.K. Bharat Bhushan, Faculty, Brahma Kumaris, Panipat
B.K. Ranjana, Faculty, Om Shanti Retreat Centre, Gurgaon, Delhi
B.K. Prem Behn, Executive Member, Administrators' Service Wing, Mohali
B.K. Surendran, Executive Member, Administrators' Service Wing, Bangalore
B.K. Veena, Executive Member, Administrators' Service Wing, Sirsi
B.K. Mahesh Bhai, London
B.K. Uttara Behn, Zonal Co-ordinator, Administrators' Service Wing, Chandigarh
B.K. Ram Shingh, Kathmandu
B.K. Poonam, Zonal Co-ordinator, Administrators' Service Wing, Jaipur (Rajasthan)
B.K. Usha Behn, Senior Rajyoga Teacher, Mount Abu
B.K. Brij Mohan ji, Chairperson, Politicians' Service Wing, Delhi
B.K. Radha, Zonal Co-ordinator, Administrators' Service Wing, Lucknow (U.P.)
B.K. Sapna, Member, Administrators' Service Wing, Delhi
B.K. Renu, Member, Administrators' Service Wing, Jodhpur
B.K. Madhu, Member, Administrators' Service Wing, Bantwa (Gujarat)
B.K. Lakshmi, Addl. Zonal Co-ordinator, Administrators' Service Wing, Delhi
B.K. Brij Mohan ji, Chairperson, Politicians' Service Wing, Delhi
B.K. Geeta, Senior Rajyoga Teacher, Mount Abu
B.K. Manorama, National Co-ordinator, Religious Wing, Allahabad
B.K. Shailesh, Secretary, Administrators' Service Wing, Godhra
B.K. Neha, Zonal Co-ordinator, Administrators' Service Wing, Ahmedabad
B.K. Avinash, Famous Singer, Nagpur, Maharashtra
B.K. Suman, Rajyoga Teacher, GS, Mount Abu

GUESTS SPEAKERS

Mr. Rakesh Mehta, IAS, State Election Commissioner, Delhi & Chandigarh
Mr. Prashant Goyal, IAS, Member (Finance), Delhi Jal Board, Delhi
Mr. Jitendra Kumar, IAS, Secretary, U.P. Human Rights Commission, Lucknow, (U.P.)
Mr. V.H. Shah, **IAS (Retd.),** Ex. Secretary, Gujarat State Election Commission, Gandhinagar
Mr. Rakesh Mittal, IAS (Retd.), Social Welfare Commissioner, Lucknow, U.P.
Dr. Dharanidhar Nath O.A.S., General Manager, Monet Power, Cuttack
Mr. V.K. Sharma, Chief Executive Officer, Guj. Info. Petro. Ltd., Ahmedabad
Mr. V. Venkatramaiah, IFS , V.C. & M.D., A.P. Co-op. Oil Seeds, Govt. of A.P., Hyderabad,
Mr. Damodar P. Gautam, Retd. Principal Secretary Govt. of Nepal
Mr. R.P. Meena, Director, Doordarshan Kendra, Jaipur, Rajasthan
Mr. KAVS Prasad, Vice President, Hotline Group of Companies, Gwalior
Mr. Bharat Trivedi, Director, Atul Infotech, Valsad
Sis. Tamanna Sehgal, Deputy Director, Audit, Employees Provident Fund, Chandigarh, Punjab